7.12.18 (E)

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 7008

Unique Paper Code : 62051104 IC

Name of the Paper : Hindi 'C'

Name of the Course : B.A. (Programme)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) गुरु गोबिंद दोउ खड़े, कांके लागूं पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोबिंद दियो बताय॥

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।

P.T.O.

munotes.in

एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै।

रोकी रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै॥

(ख) थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।

तुमहूँ कान्ह मनो भए, आज काल्हि के दानि॥

अथवा

ऊधौ मन न भए दस बीस।

एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधे ईस।

इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।

आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।

तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।

सूर हमारै नंद-नंदन बिनु, और नहिं जगदीस॥

(ग) यह धरती कितना देती है! धरती माता

कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!

नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को!

बचपन में छिः स्वार्थ लोभ वश पैसे बो कर!

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।

अथवा

करके विधि वाद न खेद करो

निज लक्ष्य निरंतर भेद करो

बनता बस उद्यम ही विधि है

मिलती जिससे सुख की निधि है

समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को

नर हो, न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो!!

2. कबीरदास की काव्य-भाषा का परिचय दीजिए। 10

अथवा

सूरदास का साहित्यिक परिचय दीजिए।

3. घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

अथवा

बिहारी के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

4. 'आह! धरती कितना देती है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। 10

munotes.in

अथवा

'नर हो, न निराश करो मन को' कविता का सार लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 3×5=15

(1) हिंदी भाषा का परिचय दीजिए

(2) राम भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ बताइए

(3) छायावाद

(4) आदिकालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए

(5) भारतेंदु-युगीन कविता की प्रवृत्तियाँ

(6) सूफी काव्यधारा की विशेषताएँ।

munotes.in